आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13 अंक : 10 जून, 2026 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

दुग्ध उत्पादन: ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं पोषण सुरक्षा का सशक्त आधार

दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में राजस्थान का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं गौरवपूर्ण है। नवीनतम आँकड़ों के अनुसार राजस्थान देश का दूसरा सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक राज्य है तथा राष्ट्रीय दुग्ध उत्पादन में लगभग 14.82 प्रतिशत की भागीदारी निभा रहा है। राज्य की पशुधन संपदा, विशेषकर देशी गाय एवं उच्च उत्पादक भैंस नस्लों की उपलब्धता, पशुपालकों की मेहनत तथा डेयरी विकास कार्यक्रमों ने राजस्थान को देश के अग्रणी डेयरी राज्यों में स्थापित किया है। राज्य में प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता भी राष्ट्रीय औसत से अधिक है, जो यहाँ की समृद्ध पशुपालन परंपरा को दर्शाती है। राजस्थान में डेयरी क्षेत्र केवल आर्थिक गतिविधि नहीं बल्कि ग्रामीण संस्कृति एवं सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। दूध, दही, छाछ एवं घी जैसे दुग्ध उत्पाद हमारे पारंपरिक खान–पान एवं पोषण सुरक्षा का आधार हैं। वर्तमान समय में आधुनिक डेयरी प्रबंधन, मूल्य संवर्धन, दुग्ध प्रसंस्करण एवं वैज्ञानिक पशुपालन तकनीकों के कारण पशुपालकों की आय में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस दिशा में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर निरंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा वैज्ञानिक पशुपालन, उन्नत डेयरी प्रबंधन, नस्ल सुधार, संतुलित पशु पोषण, पशु स्वास्थ्य संरक्षण एवं आधुनिक प्रजनन तकनीकों के माध्यम से दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु सतत प्रयास किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय के विभिन्न संघटक महाविद्यालयों, पशु विज्ञान केन्द्रों, कृषि विज्ञान केन्द्र तथा प्रसार शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से नवीनतम वैज्ञानिक जानकारी एवं तकनीकों को पशुपालकों तक पहुँचाया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा कृत्रिम गर्भाधान, भ्रूण प्रत्यारोपण, उन्नत नस्ल संरक्षण, पशु रोग नियंत्रण, हरे चारे के उत्पादन तथा दुग्ध गुणवत्ता सुधार जैसे क्षेत्रों में विशेष कार्य किया जा रहा है। साथ ही ग्रामीण युवाओं एवं विद्यार्थियों को कौशल विकास में उद्यमशिलता कार्यक्रम के तहत डेयरी उद्यमिता, स्वरोजगार एवं मूल्य संवर्द्धन आधारित प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल दुग्ध उत्पादन बढ़ाने तक सीमित न रहें, बल्कि स्वच्छ एवं गुणवत्तापूर्ण दूध उत्पादन, पशु कल्याण, पर्यावरण संरक्षण एवं टिकाऊ डेयरी विकास को भी प्राथमिकता दें। वैज्ञानिक तकनीकों, नवाचार एवं आधुनिक डेयरी प्रबंधन को अपनाकर हम ग्रामीण अर्थव्यवस्था को और अधिक सशक्त बना सकते हैं। विश्व दुग्ध दिवस के इस अवसर पर मैं सभी पशुपालकों, वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों, डेयरी उद्यमियों एवं पशुपालन क्षेत्र से जुड़े सभी व्यक्तियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वैज्ञानिक सोच, समर्पण एवं नवाचार के माध्यम से भारत एवं राजस्थान दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेंगे तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

डॉ. सुमंत व्यास

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

आधुनिक शोध और प्रौद्योगिकी का लाभ किसानों व पशुपालकों तक पहुंचाये: मुख्य सचिव

राजुवास के अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा

राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने दिनांक 25 मई को वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर की शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में आयोजित बैठक के दौरान मुख्य सचिव ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरू डॉ. सुमन्त व्यास एवं डीन–डायरेक्टर्स से संवाद किया। साथ ही विश्वविद्यालय के कार्यो के प्रस्तुतीकरण को देखा। मुख्य सचिव श्रीनिवास ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा हेरीटेज जीन बैंक की संकल्पना के आधार पर देशी गौवंशों के संरक्षण एवं उन्नयन, नस्ल सुधार कार्यो की प्रंशसा की तथा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में पशुओं की संक्रामक बीमारियों की रोकथाम हेतु टीकाकरण, उन्नत अनुसंधान केन्द्रों के कार्यो की भी सराहना की। मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कुलगुरू डॉ. सुमन्त व्यास को वेटरनरी के अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों से करार कर इस क्षेत्र में विश्वविद्यालय के कार्य विस्तार का सुझाव दिया तथा पशुचिकित्सा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के सेंटर आफॅ एक्सीलेंस को ओर अधिक बढ़ावा देने हेतु सुझाव दिया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों व गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण किया। इस अवसर पर स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के कुलगुरू डॉ. आर.बी. दुबे, कोटा कृषि विश्वविद्यालय की कुलगुरू डॉ. विमला डूकवाल सहित कुलसचिव श्री पंकज शर्मा तथा विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर्स उपस्थित रहें।

प्रसार शिक्षा परिषद् की बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर की प्रसार शिक्षा परिषद् की 10वीं बैठक 7 मई को कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक को सम्बोधित करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने कहा कि प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत संचालित 9 पशु विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा राज्य के पशुपालकों के कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, रोग निदान सेवाओं और कृषक सलाहकारी सेवाओं के माध्यम से राज्य के पशुपालकों एवं युवाओं को कौशल युक्त नवीन तकनीकों के हस्तांतरण का लाभ मिल रहा है। डॉ. सुमन्त व्यास ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रसार गतिविधियों के माध्यम से पशुपालन को अधिक से अधिक बढावा देकर पशुपालकों को स्वालम्बन एवं उद्यमिता से जोड़ने का प्रयास कर रहा है। बैठक में निदेशक प्रसार शिक्षा राजुवास, बीकानेर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने दो वर्षों का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए सभी केन्द्रों द्वारा संचालित प्रसार गतिविधियों को विस्तृत रूप से बताया। बैठक में विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान पशुपालकों को प्रोत्साहित करने के लिए राजुवास मिनरल मिक्सचर एवं अन्य सामग्री के वितरण के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। इस दौरान विभिन्न पशु विज्ञान केन्द्रों पर ग्रीन इनिशिएटिव को बढावा देने तथा बिजली लागत को कम करने हेतु सोलर सिस्टम की स्थापना के प्रस्ताव का भी अनुमोदन किया गया। बैठक में राज्य में बकरी पालन को बढावा देने हेतु राजुवास, बीकानेर द्वारा बकरी मेला आयोजन पर भी चर्चा की गई जिसकी सभी सदस्यों ने सहमति जताई। कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा खुदरा उर्वरक विक्रय प्राधिकार हेतु 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन तथा राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र के घुमन्तु एवं अर्द्ध घुमन्तु पशुपालकों के महत्व और चुनौतियों पर चर्चा हेतु कार्यशाला के आयोजन आदि बिन्दुओं पर विचार विमर्श एवं अनुमोदन किए गए। बैठक में गौ संवर्धन को बढावा देने हेतु गोमूत्र एवं गोबर की उपयोगिता हेतु वर्मीकम्पोस्ट, गौकाष्ठ, दीपक आदि के प्रशिक्षणों को बढावा देने हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए। पशुपालन को बढावा देने हेतु पशु मित्रों को प्रशिक्षण देने के विषय पर चर्चा भी की गई इसके अतिरिक्त बकरी पालन को बढावा देने एवं बकरी के दूध की पोषण वैल्यू के प्रति जागरूकता हेतु बकरी के दूध से चीज बनाने एवं दूध के विपणन की संभावना का सुझाव भी बैठक में दिया गया। बैठक के दौरान प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदन 2024–25 व 2025–26, पशुपालन नये आयाम के नवीनतम अंक तथा सितम्बर माह में वेटरनरी महाविद्यालय, उदयपुर में आयोजित होने वाली वेटरनरी एक्सटेंसन की 11वीं राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के ब्रोशर का विमोचन किया गया। बैठक में विश्वविद्यालय के कुलसचिव पंकज शर्मा, वित्त नियंत्रक विनोद कुमार यादव, डॉ. विक्रम व्यास (जोधपुर), डॉ. राजेश कुमार कसरीजा (लुधियाना), तुलछाराम सिंवर (जोधपुर), सत्यनारायण राठी (बीकानेर) उपस्थित रहे तथा डॉ. एस.के. सिंह (दुवासु, मथुरा), सुहास मनोहर (उदयपुर) ऑन–लाइन माध्यम से जुड़े। विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, पशु विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी बैठक में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के 17वें स्थापना दिवस का आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर का 17वां स्थापना दिवस कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास की अध्यक्षता में 18 मई को मनाया गया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विश्वविद्यालय के 17वें स्थापना दिवस की सभी को बधाई देते हुए कहा कि राजस्थान में पशुपालन अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान रखता है अतः पशुपालक की सेवा ही पशुचिकित्सक का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास बताया कि राजुवास विकास की अपार संभावनाओं की ओर आगे बढ़ रहा है तथा इस विकास की गति को आगे बढ़ाने हेतु विश्वविद्यालय को नवीन शोध कार्य एवं उपलब्ध संसाधनों के पूर्ण उपयोग पर दृढ़ संकल्पित होना होगा। उन्होने कहा की विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के संगठित एवं सुनियोजित प्रयासो एवं कठिन परिश्रम से विश्वविद्यालय का सफल क्रियान्वयन हो पाया है। इस अवसर पर कुलगुरु डॉ. व्यास ने विश्वविद्यालय द्वारा प्रशासनिक, वित्तीय एवं राष्ट्रीय स्तर की नवीन शोध परियोजनाओं पर उपलब्धियों की जानकारी प्रदान की एवं विद्यार्थियों को उच्च अध्ययन एवं गुणवत्ता पूर्ण कार्यो हेतु प्रेरित किया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विश्वविद्यालय के कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को आगे बढ़ने हेतु निरंतर प्रयासरत रहने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय की प्रगति का मानक उसके विद्यार्थियों का सफल विकास है। उन्होने विश्वविद्यालय के इतिहास, संरचना एवं उपलब्धियों की जानकारी देते हुए कहा की विद्यार्थियों को शिक्षण के अतिरिक्त पाठ्योत्तर गतिविधियों में प्रतिभागी बनना चाहिए। विश्वविद्यालय के कुलसचिव पंकज शर्मा ने विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा की विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों को समन्वय एवं समेकित प्रयास कर विश्वविद्यालय के उत्थान में सहयोगी बनना चाहिए। कार्यक्रम की समाप्ति पर निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा की विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षण, शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में की गई प्रगति दशक से भी अधिक समय का निरंतर प्रयास है। उन्होने कहा की यह दिवस आत्ममंथन का दिवस है एवं हमे निरंतर प्रयत्नशील होकर विश्वविद्यालय के विकास हेतु साझेदार होना चाहिए।

37वीं प्रबंध मंडल की बैठक का आयोजन

किसानों, पशुपालकों एवं विद्यार्थियों के हितार्थ कार्य करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 37वीं प्रबंध मण्डल की बैठक 30 मई को कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास की अध्यक्षता में कुलगुरु सचिवालय में आयोजित की गयी। बैठक की प्रारंभ में कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने सभी का स्वागत किया तथा विश्वविद्यालय की शिक्षण, अनुसंधान व प्रसार गतिविधियों से अवगत कराया। बैठक में ऑनलाइन जुड़े विधायक डॉ. विश्वनाथ मेघवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों, पशुपालकों, विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के हितार्थ कार्य करें ऐसी विश्वविद्यालय की प्राथमिकता होनी चाहिए। बैठक में प्रबंध मंडल की गत बैठक की पालना रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। इसके अतिरिक्त 31वीं अकादमिक परिषद्, 10वीं प्रसार शिक्षा परिषद् एवं गत स्नातकोत्तर परिषद् की कार्यवाही रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। बैठक के दौरान लोक भवन के निर्देश पर वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में रिक्त अशैक्षणिक पदों पर भर्ती प्रक्रिया राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर के माध्यम से करवाये जाने हेतु राजुवास अधिनियम में संशोधन के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया। बैठक में बोम के सदस्यों द्वारा विश्वविद्यालय के रिक्त पदों को शीघ्र भरने के लिए राज्य सरकार के स्तर पर और अधिक प्रयासो पर जोर दिया गया ताकि विश्वविद्यालय की और अधिक गतिविधियां सुचारू रूप से चल सके। वेटरनरी महाविद्यालय, जोधपुर में फैकल्टी की उपलब्धता के आधार पर पी.जी. पाठयक्रम प्रारम्भ करने की बोम ने सहमति प्रदान की। इस अकादमिक वर्ष से वेटरनरी यू.जी. पाठ्यक्रम में नीट प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रवेश दिये जाने की बोम ने मुहर लगाई। पी.जी. एवं पी.एच.डी. पाठ्यक्रम में इस वर्ष प्री–पी.जी. प्रवेश परीक्षा 12 जुलाई को आयोजित किया जाने को भी बोम ने अपनी सहमति दी। बैठक में विश्वविद्यालय द्वारा पशुओं की विभिन्न प्रजाति विशेष मेलों, प्रदर्शनियों व प्रतियोगिताओं के आयोजन पर चर्चा की गई। साथ ही राजस्थान के दक्षिण क्षेत्र के घुमन्तु व अर्ध घुमन्तु पशुपालकों के महत्व व चुनौतियों पर कार्यशाला के आयोजन पर भी चर्चा हुई। कुलसचिव पंकज शर्मा ने बोम में एजेण्डा का प्रस्तुतीकरण किया। निदेशक प्रसार शिक्षा, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बैठक में विश्वविद्यालय की गतिविधियों का पावर पॉईट प्रजेन्टेशन दिया। बैठक में प्रबंध मण्डल के सदस्य डॉ. गोविन्द सहाय शुक्ला (कुलगुरु, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर), जगमाल सिंह रायका (बीकानेर), करण सिंह राजपुरोहित (पाली), मधु कुमावत (सीकर), डॉ. इन्द्रजीत सिंह, डॉ. कुलदीप चौधरी (अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग), धीरज जोशी (कोष अधिकारी, बीकानेर), रिषभ गोदारा (सहायक प्रबंधक उरमूल, बीकानेर), डॉ. सुधीर भार्गव (वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी, राजस्थान सरकार), डॉ. लवदीप शर्मा (एफ.डी.ओ. मत्स्य विभाग), प्रो. गोविन्द सहाय गौतम (निदेशक प्रसार शिक्षा, रूवास, जयपुर), प्रो. बी.एन. श्रृंगी (अधिष्ठाता एवं संकायाध्यक्ष), विनोद कुमार यादव (वित्त नियंत्रक) उपस्थित रहे।

पशु जैव विविधता संरक्षण जागरूकता शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र द्वारा कोलायत के हदा गांव में देशी गौवंश नस्लों के संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु 13 मई को आयोजित जैव विविधता संरक्षण जागरूकता शिविर में केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. रजनी अरोड़ा ने बताया कि देशी गायों का संरक्षण और उनकी घटती संख्या के प्रति पशुपालकों को सचेत रहना होगा। केन्द्र के डॉ. नरसी राम गुर्जर ने पशुपालकों को देशी गौवंश के आर्थिक महत्व के बारे में बताते हुए इनके संरक्षण के प्रमुख वैज्ञानिक उपाय साझा किए एवं पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ाने और उन्हें बीमारियों से बचाने के लिए पशुपालकों को जानकारी प्रदान की। शिविर में कुल 39 पशुपालक उपस्थित रहे।

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के मध्य हुआ आपसी करार

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के मध्य 30 मई, 2026 को शिक्षा, शोध एवं प्रसार कार्यक्रमों हेतु आपसी करार सम्पन्न हुआ। एम.ओ.यू. के दौरान कुलगुरु वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर डॉ. सुमंत व्यास एवं कुलगुरु आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर प्रो. गोविंद सहाय शुक्ला उपस्थित रहे। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने बताया कि इस एम.ओ.यू. से दोनों विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार गति–विधियों पर संयुक्त रूप से कार्य करेंगे। इस एम.ओ.यू. से पशुचिकित्सा में आयुर्वेद विज्ञान के अर्न्त शोध विषय को बल मिलेगा जो किसानों, पशुपालकों एवं आमजन के लिए लाभकारी होगा। उन्होंने कहा कि इस करार से पशु स्वास्थ्य, जैव विविधता, पारम्परिक चिकित्सा एवं एकल स्वास्थ्य क्षेत्र में नवाचार सृजित होंगे। कुलगुरु आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर प्रो. गोविंद सहाय शुक्ला ने कहा कि इस एम.ओ.यू. से आयुर्वेद एवं पशुचिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अंतर–विषयी सहयोग से नवीन शोध संभावनाओं को बल मिलेगा तथा समाजोपयोगी अनुसंधान को नई दिशा प्राप्त होगी। एम.ओ.यू. के दौरान अधिष्ठाता प्रो. बी.एन. श्रृंगी, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया तथा आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय के प्रो. ए. नीलिमा, चिकित्सालय अधीक्षक एवं प्रो. हरिश कुमार सिंगल, विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर कौमारभृत्य विभाग भी उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा दिनांक 4 मई को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 18 मई को गांव बी.जी.डब्ल्यू गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 83 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा दिनांक 12–13, 15–16, 19–20, 22–23, 26–27 एवं 29–30 मई को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय तथा दिनांक 6 मई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 178 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 29 मई को गांव मथानियां में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 31 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा दिनांक 26 मई को गांव बुंगाव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 22 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 8 मई को केन्द्र परिसर में तथा 16 मई को गांव धामला में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 57 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा दिनांक 15 मई को गांव माकरोडा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 32 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा दिनांक 8, 12, 23 एवं 27 मई को गांव बालासर, रनसीसर, किकराली एवं घोत्र मुन्देराना गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 90 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा दिनांक 15 एवं 20 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 72 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर, हनुमानगढ़ द्वारा 16 मई को केन्द्र परिसर में तथा 19 मई को गांव दीपलाना में आयोजित कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 49 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

दूध बढाने के मुख्य वैज्ञानिक और घरेलू उपाय

संतुलित आहार : पशुओं को नियमित रूप से संतुलित आहार दें, यह कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज और विटामिन का सही मिश्रण है, जो दूध उत्पादन, फैट प्रतिशत में वृद्धि, प्रजनन क्षमता में सुधार और बीमारियों से बचाव सुनिश्चित करता है, जिसमें खली, चोकर, दालों का छिलका, हरा चारा और अनाज शामिल हो। संतुलित आहार में 2 किलो (दाना, खली, चोकर, मिनरल मिक्चर) शरीर के रखरखाव के लिए और 400–500 ग्राम प्रति लीटर दूध उत्पादन पर अतिरिक्त दिया जाना चाहिए।

हरा चाराः सूखे चारे के साथ हर रोज हरा चारा (जैसे बरसीम, जइ, रिजका) देना आवश्यक है, जो दूध उत्पादन को 60– 70 प्रतिशत तक बनाए रखने में मदद करता है। हरा चारा पौष्टिक होता है और इसमें उच्च नमी होती है, जो दूध उत्पादन को बढ़ाने के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। यह विटामिन , प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज और आवश्यक विटामिन का एक प्रमुख स्रोत है। हरा चारा सांद्रित चारे की लागत कम करने में सहायता करता है तथा डेयरी उत्पादन को अधिक लाभदायक बनाता है।

खनिज मिश्रणः पशु आहार में रोजाना 50–60 ग्राम अच्छी गुणवत्ता वाला मिनरल मिक्चर मिलाएं, जो दूध की मात्रा बढ़ाने के लिए बेहद जरूरी है।

आरामदायक वातावरणः पशुओं को रहने के लिए साफ–सुथरी और हवादार जगह उपलब्ध कराएं।

स्वच्छ पानीः दुधारू पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ पानी उपलब्ध कराएं, क्योंकि दूध का 85 हिस्सा पानी ही होता है। दुधारू गायों के लिए स्वच्छ और प्रचुर मात्रा में पानी दूध उत्पादन, स्वास्थ्य और उपापचय के लिए सबसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। एक लीटर दूध उत्पादन के लिए गाय को लगभग 4–5 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। स्वच्छ पानी बेहतर पाचन, अधिक चारा सेवन, शरीर के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करता है।

स्वास्थ्य प्रबंधनः हर 3 महीने में पशु की डिवर्मिंग (पेट के कीड़े मारने की दवा) कराएं और मैस्टाइटिस (थन रोग) जैसी बीमारियों से बचाव के लिए थन की सफाई रखें। दूध निकालने के बाद में थनों को कीटाणुनाशक घोल में डुबोएं और गाय के बैठने की जगह साफ–सुथरी रखें।

दुग्ध उत्पादन बढाने के लिए हर्बल उपाय

- शतावरी का पाउडर दूध बढाने की सबसे प्रमुख आयुर्वेदिक औषधि है।
- मेथी को भिगोकर, उबालकर और उसमें गुड़ मिलाकर देने से पशुओं का दूध बढता है।
- दालचीनी –यह सूजन कम करने, पाचन में सुधार और समग्र स्वास्थ्य बढ़ाने में मदद करती है।
- बाजार में उपलब्ध हर्बल उत्पाद भी आजमाए जा सकते हैं।

डॉ. देवेन्द्र कुमार
प्रभारी अधिकारी, पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर, पाली

सफलता की कहानी

बेरोजगारों के लिए मिसालः डेयरी फार्मिंग से सफलता की राह पर बढ़े सोहनलाल

लूनकरणसर क्षेत्र के गांव मनाफरसर निवासी 50 वर्षीय सोहनलाल ने आर्थिक तंगी के कारण पांचवी तक शिक्षा प्राप्त कर पढाई छोड़ दी थी। बेरोजगारी से परेशान होकर उन्होनें दो साहीवाल गायों से डेयरी का काम शुरू किया परन्तु गायों से अधिक दूध उत्पादन के बारे में पता चलने पर वे पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर के वैज्ञानिकों से मिले और डेयरी फार्मिंग प्रशिक्षणों में भाग लिया। यहां से उन्होनें नस्ल सुधार संतुलित आहार, टीकाकरण, कृमिनाशक दवा और पशु प्रबंधन के आधुनिक एवं वैज्ञानिक तरीके सीखें। कड़ी मेहनत और वैज्ञानिक तरीको का नतीजा यह हुआ कि आज सोहनलाल के पास 13 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाली साहीवाल गायें है जिनसे वे प्रतिदिन 60 किलो दूध का उत्पादन ले रहें है। देशी गायों के दूध की बाजार में जबरदस्त मांग होने से उन्हें बिक्री में कभी दिक्कत नहीं आती। इनके पास साहीवाल नस्ल का सांड भी है जिससे प्राकृतिक गर्भाधान करवाते है। साथ ही उत्तम गुणवत्ता वाले सीमन से कृत्रिम गर्भाधान भी करवाते हैं। वर्तमान में सोहनलाल अपने डेयरी फार्म से सालाना लगभग 5 लाख रूपये की शुद्व आय अर्जित कर रहें है। कम पढ़े–लिखे होने के बावजूद वे पशुओं का प्राथमिक उपचार स्वंय कर लेते है। उन्होनें नवजात बछड़ों, दुधारू और ग्याभिन पशुओं के लिए अलग–अलग बाड़े भी बना रखे है जिसमें गर्मी–सर्दी के मौसम का पूरा ध्यान रखते है। अपने खेत में हरा चारा उगाते है और चारा काटने की मशीन व ट्रेक्टर भी रखते है। साहीवाल नस्ल की भारी मांग के चलते पजांब–हरियाणा से पशु पालक 50 हजार रूपये तक उनकी गायें खरीदने आते है। सोहनलाल अपनी सफलता का श्रेय पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर के वैज्ञानिको और अपनी मेहनत को देते हैं। वे समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र की प्रयोगशाला में दूध, गोबर एवं गौमूत्र की निःशुल्क जांच करवाते है और अन्य युवाओं को भी डेयरी व्यवसाय के लिए केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते है।

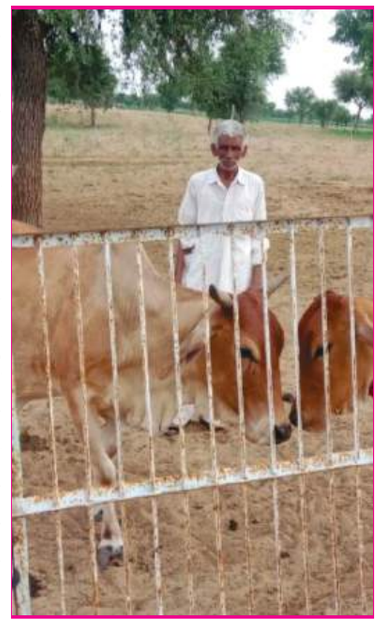

सम्पर्कः सोहनलाल
गांव मनाफरसर, लूनकरणसर, बीकानेर(मो. : 9983005239)

पशुओं में प्री–मानसून टीकाकरण का महत्व

वर्षा ऋतु के आगमन से पहले पशुओं में कई संक्रामक रोगों के फैलने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए मानसून शुरू होने से पहले पशुओं का टीकाकरण कराना अत्यंत आवश्यक होता है। बारिश के मौसम में बीमार पशु द्वारा मिट्टी और पानी भी संक्रमित हो जाते हैं जिसके संपर्क में आने से स्वस्थ पशुओं के संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखें। इस मौसम में पशुओं में होने वाले प्रमुख संक्रामक रोग जैसे गलगोंटू, लंगड़ा बुखार, खुरपका–मुंहपका, न्यूमोनिया आदि है। पशुओं में होने वाले संक्रामक रोग जैसे खुरपका–मुहंपका, गलगोटू तथा लंगड़ा बुखार प्रमुखता से बरसात के दिनों में गौवंश को प्रभावित करते हैं तथा कई बार पशुओं की जान भी चली जाती हैं इन रोगों से बचाव हेतु बारिश से पहले टीकाकरण करना आवश्यक है।

प्री मानसून टीकाकरण क्या है:

मानसून से पहले पशुओं को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाने हेतु लगाए जाने वाले टीकों को प्री–मानसून टीकाकरण कहा जाता है। वर्षा ऋतु में वातावरण में नमी बढ़ने, जलभराव होने तथा रोगजनक जीवाणुओं एवं विषाणुओं की वृद्वि के कारण रोग तेजी से फैलते है। समय पर टीकाकरण करने से पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाती है। मानसून में फैलने वाले रोगों में गलघोटू, ब्लैक क्वार्टर, खुरपका–मुंहपका रोग एवं बकरियों में फड़किया रोग प्रमुख है। यह रोग पशुओं की मृत्यु तक का कारण बन सकते है तथा किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। अतः इन रोगों से बचाव के टीके पशुचिकित्सक की सलाह से पशुपालकों को अवश्य लगाने चाहिए।

टीकाकरण का महत्व:

- ❖ पशुओं में समय–समय पर टीकाकरण कराना अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि यह उन्हें विभिन्न संक्रामक एवं जानलेवा रोगों से सुरक्षित रखने का सबसे प्रभावी उपाय है।
- ❖ टीकाकरण द्वारा पशुओं के शरीर में रोगों के विरूद्व प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है जिससे वे रोगजनकों का सामना करने में सक्षम बनते हैं। विशेष रूप से मानूसन के मौसम में वातावरण में नमी बढ़ने के कारण अनेक बैक्टीरिया एवं वायरस तेजी से फैलते हैं जिससे पशुओं में रोग होने की संभावना अधिक रहती है। ऐसे समय में टीकाकरण पशुओं के स्वास्थ्य की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- ❖ टीकाकरण का सबसे बड़ा लाभ यह है कि पशु स्वस्थ रहते हैं और उनका दूध उत्पादन प्रभावित नहीं होता। यदि पशु किसी संक्रामक रोग से ग्रसित हो जाएं तो उनके दूध उत्पादन में भारी कमी आ सकती है, जिससे पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। नियमित टीकाकरण से पशु स्वस्थ एवं सक्रिय बने रहते हैं, जिससे दूध उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता दोनों बनी रहती है।
- ❖ इसके अतिरिक्त टीकाकरण पशुओं की मृत्यु दर को कम करने में भी सहायक होता है। गलघोटू, ब्लैक क्वार्टर तथा खुरपका–मुंहपका जैसे रोग कई बार पशुओं की मृत्यु का कारण बन जाते हैं। समय पर लगाए गए टीके इन रोगों की गंभीरता को कम करते हैं तथा पशुओं को सुरक्षित रखते हैं।
- ❖ टीकाकरण से पशुपालकों को उपचार पर होने वाले अतिरिक्त खर्च से भी राहत मिलती है।

टीकाकरण के समय सावधानियां:

- ➢ केवल स्वस्थ पशुओं को ही टीका लगवाना चाहिए।
- ➢ टीका हमेशा पशुचिकित्सक की सलाह से लगवाएं
- ➢ टीकाकरण से पहले पशुओं को कृमिनाशक दवा अवश्य देवें।
- ➢ टीकाकरण के बाद पशु को आराम एवं स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना चाहिएं
- ➢ टीकाकरण का रिकार्ड सुरक्षित रखना चाहिए।

पशुपालकों के लिए सुझाव:

- ❖ पशुपालकों को अपने पशुओं के स्वास्थ्य के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए, विशेषकर मानसून के मौसम से पहले।
- ❖ वर्षा ऋतु में वातावरण में नमी बढ़ने तथा जलभराव की स्थिति बनने से विभिन्न संक्रामक रोग तेजी से फेल सकते हैं। इसलिए मानसून शुरू होने से पहले सभी पशुओं का आवश्यक टीकाकरण अवश्य कराना चाहिए। समय पर लगाया गया टीका पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करता है और उन्हें गंभीर बीमारियों से सुरक्षित रखने में सहायता करता है।
- ❖ इसके साथ ही पशुशाला की नियमित साफ–सफाई भी अत्यंत आवश्यक है। गंदगी, नमी एवं जमा हुआ पानी रोग फैलाने वाले जीवाणुओं और परजीवियों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं। इसलिए पशुशाला को सूखा, स्वच्छ एवं हवादार बनाए रखना चाहिए।
- ❖ पशुओं के मल–मूत्र का उचित निस्तारण तथा समय–समय पर कीटाणुनाशकों का छिड़काव करना लाभदायक है।
- ❖ पशुओं को संतुलित एवं पौष्टिक आहार देना भी उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। हरे चारे, सूखे चारे, खनिज मिश्रण एवं स्वच्छ पानी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।
- ❖ स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था बनाए रखना भी बहुत महत्वपूर्ण है। दूषित पानी कई रोगों का कारण बन सकता है, इसलिए पशुओं को हमेशा साफ एवं ताजा पानी ही पिलाना चाहिए।
- ❖ यदि पशुपालक इन सभी बातों का ध्यान रखें तो पशुओं में रोगों की संभावना काफी हद तक कम की जा सकती है। इससे पशु स्वस्थ रहते हैं, उत्पादन क्षमता बढ़ती है तथा पशुपालकों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

निष्कर्ष: प्री–मानसून टीकाकरण पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाने का सबसे प्रभावी उपाय है। यह न केवल पशुओं के स्वास्थ्य की रक्षा करता है, बल्कि पशुपालकों की आय एवं पशुधन विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए प्रत्येक पशुपालक को समय पर टीकाकरण कराना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

ग्रीष्म ऋतु में पोल्ट्री प्रबंधन

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ पोल्ट्री पालन कृषि एवं पशुपालन का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह उद्योग ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में अंडे और मांस की बढती मांग के कारण रोजगार तथा आय का अच्छा स्रोत बन चुका है। अंडा एवं मांस उत्पादन में वृद्धि के साथ–साथ पोल्ट्री पालन की तकनीकों में भी निरंतर सुधार हुआ है। किंतु ग्रीष्म ऋतु पोल्ट्री उद्योग के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण समय माना जाता है। अत्यधिक तापमान, तेज धूप और गर्म हवाएँ, पानी की कमी और वातावरण में बढी हुई आर्द्रता पक्षियों के स्वास्थ्य तथा उत्पादन क्षमता को प्रभावित करती है।

गर्मी का पोल्ट्री पक्षियों पर प्रभावः

गर्मी बढने पर पक्षियों के शरीर का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है, जिससे वे तनावग्रस्त हो जाते हैं। इसे उष्मा तनाव कहा जाता है। इस स्थिति में पक्षी तेजी से साँस लेना एवं पंख फैलाना, कम चारा खाना और पानी अधिक पीते है इसके प्रभाव निम्न प्रकार से दिखाई देते हैं जैसे .शरीर में कमजोरी एवं सुस्ती आने लगना, उनकी वृद्धि का रुक जाना, अंडा उत्पादन में कमी, अंडों के छिलके पतले होना ,रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाना तथा मृत्यु दर बढने की संभावना रहती है।

ग्रीष्म ऋतु में उचित आवास प्रबंधनः

गर्मी के मौसम में पोल्ट्री शेड को इस प्रकार बनाना चाहिए कि उसमें अधिक गर्मी न ठहरे। शेड की दिशा पूर्व–पश्चिम होनी चाहिए ताकि सीधी धूप का प्रभाव कम पडे। पोल्ट्री शेड की दीवारों या छत के किनारे गीले बोरे (जैसे जूट या कपास के बोरे) लटका दें। ये बोरे दिन में पानी में भिगोए जाते हैं और हवा चलने पर ठंडा वातावरण बनाते हैं जिससे शेड का तापमान 3–5 डिग्री सेल्सियस तक कम हो जाता है और मुर्गियों को ठंडक मिलती है। गर्मी के मौसम में पोल्ट्री शेड को ठंडा और हवादार रखना आवश्यक है। छत पर सफेद रंग या घास–फूस की परत डालने से तापमान कम किया जा सकता है। छत पर पराली या पुआल बिछाएँ और दिन में 3–4 बार पानी का छिडकाव भी कर देना चाहिए। शेड में पर्याप्त खिडकियाँ, पंखे, कूलिंग पैड तथा उचित वेंटिलेशन की व्यवस्था होनी चाहिए। पोल्ट्री शेड में हवा के समुचित आवक एवं निकास के लिए दोनों तरफ खुले रास्ते या खिडकियाँ बनानी चाहिए। शेड के आसपास पेड़–पौधे लगाने चाहिए जिससे वहाँ का वातावरण ठंडा रहे।

पानी एवं आहार प्रबंधनः

गर्मी के मौसम में पानी की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। गर्मी में पक्षियों को स्वच्छ, ठंडा और पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध

कराना चाहिए। पानी में इलेक्ट्रोलाइट्स पाउडर (सोडियम, पोटेशियम, क्लोराइड) मिलाकर देने चाहिए एवम विटामिन सी,ई और सेलेनियम जैसे तत्व भी दे जो गर्मी से बचाव करते हैं। पानी के बर्तनों की नियमित सफाई करनी चाहिए। आहार में प्रोटीन, विटामिन और खनिज संतुलित मात्रा में होने चाहिए। ऊर्जा युक्त आहार का प्रयोग सीमित मात्रा में करना चाहिए। मुर्गियों को पोषक तत्वों से भरपूर आहार को सुबह जल्दी और शाम को देर से (ठंडे समय में) देना चाहिए। इनके अलावा कुछ देसी नुस्खे भी गर्मी के बचाव के लिए प्राकृतिक इलेक्ट्रोलाइट्स भी उपयोग में लिए जा सकते है जिसमे 1 लीटर पानी में 5 ग्राम गुड और 3 बूंद नींबू रस मिलाकर पक्षियों को दे सकते हैं। आहार में 1 प्रतिशत तुलसी और 1 प्रतिशत अजवाइन पाउडर मिलाकर देने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढती है और गर्मी का असर भी कम होता है।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता प्रबंधनः

गर्मी के मौसम में बीमारियों का खतरा बढ जाता है। इसलिए पोल्ट्री फार्म की नियमित सफाई, कीटाणुनाशक दवाओं का छिडकाव तथा समय–समय पर टीकाकरण आवश्यक है एवं पशु चिकित्सक की सलाह लेते रहना चाहिए। मृत पक्षियों का उचित निस्तारण करना चाहिए और फार्म के आसपास स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए। उचित आवास, संतुलित आहार, स्वच्छ पानी और स्वास्थ्य प्रबंधन से पक्षियों की उत्पादन क्षमता बनी रहती है तथा पोल्ट्री व्यवसाय अधिक लाभदायक बनता है। वैज्ञानिक रूप से संतुलित आहार और स्थानीय देशी उपायों का समन्वय करके इस प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है। अतः सफल पोल्ट्री पालन के लिए गर्मी के मौसम में विशेष सावधानी और उचित प्रबंधन आवश्यक है।

डॉ. कुसुमलता झाझड़ियॉ
पशु चिकित्सा अधिकारी, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर
डॉ. दिव्या चौधरी
पीएचडी स्कॉलर, लुवास, हिसार

निदेशक की कलम से...

विश्व दुग्ध दिवस : ग्रामीण समृद्धि, पोषण सुरक्षा एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में श्वेत क्रांति ही मुख्य आधार

किसान एवं पशुपालक भाइयों,

प्रतिवर्ष 1 जून को "विश्व दुग्ध दिवस" मनाया जाता है। इस दिवस की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा वर्ष 2001 में की गई थी, जिसका उद्देश्य दुग्ध एवं डेयरी क्षेत्र के वैश्विक महत्व, मानव स्वास्थ्य एवं पोषण में दुग्ध की भूमिका तथा दुग्ध उत्पादकों के अमूल्य योगदान के प्रति जन–जागरूकता बढ़ाना है। यह दिवस न केवल डेयरी क्षेत्र की उपलब्धियों का उत्सव है, बल्कि सतत् कृषि, ग्रामीण विकास, खाद्य सुरक्षा एवं आर्थिक सशक्तिकरण में दुग्ध क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित करता है। आज भारत दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में विश्व में प्रथम स्थान पर स्थापित है। नवीनतम "बेसिक एनिमल हसबेंड्री स्टैटिस्टिक्स–2025" के अनुसार देश का कुल दुग्ध उत्पादन लगभग 247.87 मिलियन टन तक पहुँच चुका है, जो विश्व के कुल दुग्ध उत्पादन का लगभग 25 प्रतिशत है। यह उपलब्धि देश के करोड़ों मेहनती पशुपालकों, वैज्ञानिकों, पशु चिकित्सकों, डेयरी सहकारी संस्थाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा नीति निर्माताओं के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। भारत की श्वेत क्रांति ने न केवल दुग्ध उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि की, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए लाखों परिवारों की आय एवं जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार भी किया है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय किसानों के लिए नियमित एवं स्थायी आय का प्रमुख स्रोत है। यह क्षेत्र महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि ग्रामीण भारत में बड़ी संख्या में महिलाएँ पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन गतिविधियों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं। डेयरी व्यवसाय ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने तथा परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। दूध को "संपूर्ण आहार" माना जाता है, क्योंकि इसमें शरीर के विकास एवं स्वास्थ्य के लिए आवश्यक प्रोटीन, कैल्शियम, वसा, विटामिन एवं खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। बच्चों, गर्भवती महिलाओं, वृद्धजनों एवं सामान्य जनमानस के लिए दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद संतुलित पोषण का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। कुपोषण एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से निपटने में भी दुग्ध क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए दुग्ध उत्पादन केवल आर्थिक गतिविधि ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पोषण सुरक्षा का भी एक सशक्त माध्यम है। वर्तमान समय में उन्नत पशुपालन तकनीकों, कृत्रिम गर्भाधान, नस्ल सुधार कार्यक्रमों, संतुलित पशु आहार, पशु स्वास्थ्य सेवाओं, डिजिटल डेयरी प्रबंधन तथा मूल्य संवर्द्धित दुग्ध उत्पादों के माध्यम से डेयरी क्षेत्र निरंतर प्रगति कर रहा है। विश्व दुग्ध दिवस हमें यह अवसर प्रदान करता है कि हम दुग्ध उत्पादकों, पशुपालकों, वैज्ञानिकों, पशु चिकित्सकों एवं डेयरी क्षेत्र से जुड़े सभी हितधारकों के योगदान को सम्मानपूर्वक स्मरण करें। साथ ही यह संकल्प लें कि आधुनिक तकनीकों, वैज्ञानिक पशुपालन, गुणवत्तापूर्ण दुग्ध उत्पादन एवं सतत् डेयरी विकास को अपनाकर ग्रामीण समृद्धि, पोषण सुरक्षा तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान सुनिश्चित करेंगे।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
संपादक
डॉ. संजय सिंह
डॉ. वैशाली
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया